INSTITUTE OF ADVANCED STUDIES IN EDUCATION,

BILASPUR (C.G.)

Affiliated to

ATAL BIHARI VAJPAYEE UNIVERSITY, BILASPUR (C.G.)

B.Ed. - Year

PAPER-V

Pedagogy of Language- Hindi

इकाई १ – भाषा का अर्थउत्पत्ति एवं प्रकृति

इकाई – २ हिन्दी भाषा की संरचना

सु श्री आशा बनाफर

ईकाई क्रमांक – ०१ :-

भाषा का अर्थ, उत्पत्ति एवं प्रकृति

भाषा क्या है ?

भाषा वह साध है, जिसके द्वारा हम अपने विचारो को व्यक्त करते है । इस अभिव्यक्ति के लिये हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते है ।

भाषा मुख से उच्चरित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है, जिनके द्वारा मन की बातों को अभिव्यक्ति प्रदान की जाती है ।

भाषा - बोलना या कहना ।

भाषा वह है जो बोली या कही जा सके ।

मनुष्य अपने भावों विचारों, अनुभूतियों को भली भांति केवल ध्वनि संकेतो के माध्यम से ही अभिव्यक्त करता है । संकेत अशाब्दिक भाषा एवं ध्वनि संकेत शाब्दिक भाषा की जाती है ।

‘‘भाषा वह साधन अथवा माध्यम है, जिसके द्वारा अपने विचार, भाव तथा इच्छाओं की अभिव्यक्ति करता है ।’’

‘‘भाषा संसार का नादयय चित्र है, ध्वनिमय स्वरूप है, यह विश्व की हृदयतंत्री की झंकार है, जिनके स्वर में अभिव्यक्ति होती है।’’

सुमित्रा नंदन पंत

‘‘मुख्या से उच्चरित होने वाले शब्दों और वाक्यो आदि का वह समूह जिसके द्वारा मन की बात बतायी जाती है, भाषा कहलाती है ।’’

रामचन्द्र वर्मा

‘‘भाषा अभिव्यक्ति की दृष्टि से उच्चरित एवं सीमित ध्वनियों का संगठन है ’’

-क्रांच-

‘‘भाषा उच्चारण अवयों से उच्चरित स्वेच्छाचारी ध्वनि प्रतीकों की वह अवस्था है, जिसके द्वारा एक समाज के लोग आपस

में भावों और विचारो का आदान प्रदान करते है ।”

-भोला नाथ तिवारी-

‘‘विचार आत्मा की भूक या ध्वन्यात्मक बातचीत है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होंठो पर प्रकट होती है, तो उसे भाषा की संज्ञा देते है ।”

-प्लेटो-

‘‘ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा प्रकट करना ही भाषा है ।

-स्वीट-

संपूर्ण जीवनमण्डल में केवल मनुष्य को ही भाषा का अमूल्य वरदान ईश्वर से मिला है । भाषा के कारण ही मनुष्य, मनुष्य है, और सभी जीवधारियों में सर्वोत्तम स्थान में है ।

भाषा एक मानवीय कलाकृति है । डार्विन जैसे विचारको का मत है, कि भाषा ईश्वरीय वरदान नहीं है, अपितु ध्वनियों शब्दों और बोली से विकसित और परिषकृत होकर आज इस अवस्था तक पहूंची है ।

भाषा यदि प्रकृति की देन है, तो यह प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है ।

मनुष्य मुंह के विभिन्न अवयवो की सहायता से विविध प्रकार की ध्वनियों का उच्चारण करता है, जिसे अक्षर तथा शब्दों से प्रकट किया जाता है ।

आज भी मनुष्य की अनुभूतियों को शब्दिक रूप से ही प्रकट करना संभव नहीं होता । उसके लिये मूक भाषा का प्रयोग भी किया जाता है । इस प्रकार भाषा के दो सशक्त रूप हमारे सामने आते है :-

१. शाब्दिक भाषा

२. अशाब्दिक भाषा

भाषा ज्ञान का प्रवेश द्वार है । भाषा के माध्यम से ही सांस्कृतिक विचार व धरोहर एक पीढी से दूसरी पीढी तक संचारित होते है ।

भाषा के द्वारा ही समाज के लोग एक दूसरे से बातचीत कर सकते है ।

भाषा इंसान की मदद करती है , कि वह क्या अनुभव कर रहे है । और उनकी भविष्य को लेकर क्या योजनायें है ?

प्रकृति वस्तुओ की स्वाभाविक आवाजो को पहचानने से भाषा का विकास हुआ है । शब्द और उसके अर्थ में एक संबंध है, जिसे प्रकृति एक सुंदर सुस्वर ध्वनि प्रदान करती है ।

भाषा हमारे जीवन का शायद उतना ही कुदरती अंग है, जितना की सांस लेना ।

अपनी बात समझाने के लिये दूसरो की बातो को समझने के लिये, नई बाते जानने के लिये पढने-लिखने के लिये हम भाषा का प्रयोग करते है ।

<u>– भाषा संस्कृति का माध्यम है :–</u>

भाषा और संस्कृति दोनो परम्परा से प्राप्त होती है, अतः दोनो के बीच गहरा संबंध है । जहां समाज के विभिन्न क्रिया कलाप संस्कृति का निर्माण करते है, वहीं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिये भाषा का ही आधार लिया जाता है ।

<u>जैसे :–</u> पोराणिक कहांनियां, पर्व, त्यौहार, मेला, लोक कथाएं जीवन शैली, राष्ट्रप्रेम, समन्वय आदि भी भाषा से प्रभावित होते है ।

किसी भी क्षेत्र विशेष के मानव को परखने के लिये उसकी भाषा को समझना आवश्यक है ।

<u>भाषा साहित्य का माध्यम है :–</u>

भाषा के माध्यम से ही साहित्य की अभिव्यक्ति हो पाती है । साहित्य हमें अपने समकालीन जीवन ही नहीं अतीत से भी जोडने का कार्य करती है । साहित्य का अध्ययन उन्नत और उदात विचों को जन्म देता है । भाषा का साहित्यिक रूप हमारे बौद्धिक एवं भावात्मक विकास में सहायक होते है ।

<u>भाषा की आवश्यकता क्यों :–</u>

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । यदि मनुष्य के पास भाषा न हो तो वह पापरिक व्यवहार चलाने में असमर्थ हो जायेगा । स्वयं के ज्ञान का अन्यत्र प्रयोग करने के लिऐ भाषा एक मात्र सारणी (माध्यम) है ।

भाषा के द्वारा ज्ञान सर्वत्र प्रसार करता है । भाषा के द्वारा भिन्न भिन्न संज्ञाओं और क्रियाओं का व्यवहार करके मनुष्य अपना कार्य करने में समर्थ होता है ।

''जिसका जितना जीवन का सूक्ष्म प्रयोजन होगा उसे उतनी ही सूक्ष्म विकसित संस्कारी भाषा की आवश्यकता होगी ।''

भाषा हमारे विचारों के संप्रेषण का महत्वपूर्ण माध्यम है, जिसका जन्म सदियों पूर्व हुआ । भाषा के द्वारा ही हम किसी दूसरे व्यक्ति के भावों विचारों के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व व परिवारिक पृष्ठभूमि का परिचय प्राप्त करते है । जब व्यक्ति कोई बात मुंह से उच्चारित करता है, या उसे लिखाकर अभिव्यक्त करता है, तो उसकी भाषा में उसके अंतरंग भावों के साथ साथ उसका राज्य, वर्ग, जातीयता और प्रांतियता भी परिलक्षित होती है ।

उन्नत मानसिक संवेदना वाले व्यक्ति की भाषा सर्वदा स्वस्थ और संस्कारी होगी ।

अतः भाषा का संस्कारित होना अनिवार्य प्रक्रिया है ।

अतः मानवीय भाषा का महत्व सिर्फ उस अभिव्यक्ति क्षमता या संप्रेषण क्षमता में नहीं है बल्कि व्यक्ति जाति, संस्कृति को प्रतिलिंबित करने की क्षमता भी निहित है ।

<u>भाषा की आवश्यकता संप्रेषण के लिये :-</u> भाषिक आदान प्रदान से संप्रेषण सम्पन्न हेाता है । इसी भाषिक संप्रेषण व्यापार से पारिवारिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय और व्यक्ति का व्यक्तिगत् संप्रेषण निर्बाध संभव हो सकता है ।

<u>शिक्षा के लिये भाषा :-</u> मानव को सभ्य एवं संपूर्ण बनाने के लिये शिक्षा जरूरी है, और शिक्षा के लिए भाषा का ज्ञान आवश्यक है ।

<u>दर्शनिक चिंतन के लिये भाषा :-</u> विश्व के हितों को ध्यान में रखते हुये चिंतन मनन गहराई से किया जामता है, वह दर्शनिक चिंतन कहलाता है । यही चिंतन या दर्शन एक पीढी से दूसरी पीढी के भाषा हस्तांतरित होती है । भाषा का यह

अदृश्य दर्शनिक पांडित्य और विद्वता भाषा के महत्व को विशिवर बना देता है ।

<u>नये आविष्कारों और शोध अभिव्यक्ति के लिये भाषा :-</u> विश्व में विज्ञान से लेकर भाषा शिक्षण तक सभी क्षेत्रों में नये -नये आविष्कार व शोध होते रहते है, इनमें अध्ययन और शोध लेखन के लिये नये-नये शब्दों का या पारिभषक शब्दों की रख्ना की जाती है । सामाजिक-वैज्ञानिक विकास की अभिव्यक्ति भाषा के द्वारा ही संभव है ।

<u>सर्जनात्मकता के लिये भाषा :-</u> तथ्यात्मक व सूचनात्मक प्रयोगो के अतिरिक्त सर्जजात्मक व रसात्मक प्रयोगो में भी देखा जा सकता है । भाषा के बिना लिखित साहित्य का कोंई अस्तित्व नहीं । साहित्य भाषा के कारण ही इतने वर्षो तक सुरक्षित रहकर अब तक हमें अध्ययन के लिये प्रेरित करते है ।

<u>शिक्षित समाज के निर्माण के लिये भाषा :-</u> भाषा एक सामाजिक संपत्ति भी है, जिससे शिक्षित समाज का भी विकास, नव निर्माण संभव है । भिन्न-भिन्न प्रकार की भौगोलिक, सांस्कृतिक और व्यवहारिक विभिन्नता की भाषा का प्रयोग एक ऐसे विशिष्ट समाज का निर्माण करता है, जिसमें जातीयता, प्रांतियता और राष्ट्रीयता सुरक्षित एवं संरक्षित होती है ।

<u>संस्कृति एवं सभ्यता के संरक्षण के लिये भाषा :-</u> सांस्कृतिक धरोहर पीढी दर पीढी भाषा के माध्यम से संरक्षित होते है । आज भी ऐसी अनेकीन संस्कृति, सभ्यता संबंधी पाण्डुलिपियॉ विद्यमान है, जिसके आधार पर अनुसंधान की अपार संभ्पावनाये है ।

<u>चिंतन के माध्यम के रूप में भाषा :-</u> विद्यार्थी बहुत कुछ सुने बोले या लिखे-पढे इतना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु यह बहुत आवश्यक है, कि वह इस आण्धार पर चिंतन करें ।

भाषा विचारें का मूल स्त्रोत है, भाषा के बिना विचारो का कोई अस्तित्व नहीं ।

समग्र रूपेण हम यह कह सकते है, कि जीवन और समाज के ऐसा कोई पक्ष नहीं जहॉ भषा का उपयोग और आवश्यकता

न हो ।

भाषा की विशेषताएँ :- भाषा के माध्यम से संपूर्ण मानव समाज प्रभावि

भाषा में निम्नांकित विशेषताएँ होती है :-

१. भाषा मानव मण्डल का ध्वनिमय स्वरूप है ।

२. भाषा अभिव्यक्ति की दृष्टि से उच्चारण की सीमित ध्वनियों का संगठन है ।

३. ध्वनिम शब्दों संकेतो तथा चिन्हों द्वारा भावो एवं विचारो की अभिव्यक्ति ही भाषा है ।

४. भाषा के माध्यम से मानव अपने ज्ञान को संचित करता है, प्रसार करता है, तथा उसमें अविवृद्धि करता है ।

५. मानव की वह कलाकृति जिसके प्रमुख कौशल-बोलना, लिखना, पढना तथा सुनना है ।

भाषा की सामान्य विशेषताएँ :-

१. भाषा पैतृक संपत्ति नहीं

२. भाषा परम्परागत् है, व्यक्ति उसका अर्जन कर सकता है, उसे उत्पन्न नहीं कर सकता ।

३. भाषा का कोई अंतिम स्वरूप नहीं हेाता । भाषा परिवर्तनशील विकास की एक प्रक्रिया है ।

४. भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर ले जाती है ।

५. भाषा आद्यान्त सामाजिक वस्तु है । भाषा का जनम समाज में ही होता है, उसका विकास समाज में हेाता है, और उसका प्रयोग भी समाज में हेता है ।

६. भाषा स्थूलता से सूक्ष्मता और प्रौढता की ओर ले जाती है । भाषा आरंभ में स्थूल होती है, परन्तु धीरे-धीरे यह सूक्ष्म भावों और विचारो के आदान-प्रदान के लिये सूक्ष्म तथा प्रौढ हो जाती है ।

७. भाषा अर्जित संपत्ति है मनुष्य अपने चारों ओर के वातावरण से भाषा का अर्जन करता है ।

८. भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होत४ा है । वस्तुतः अनुकरण मनुष्य का सबसे बडा गुण है।

९. भाषा कठिनता से सरलता की ओर अग्रसर हेाती है । व्याकरण के अन्तर्गत आरंभ में ंतो अनेक रूपों तथा अपवादों की अधिकता थी परन्तु धीरे-धीरे आधुनिक भाषाओं तक आते आते नियम बनकर रूप कम हो गये तथा अपवादो की अधकता भी कम हो गयी ।

१०. भाषा चिर परिवर्तनशील है ।

वस्तुतः भाषा के मौखिक रूप हो भाषा कही जाती है लिखित रूप तो उसके पीछे-पीछे ही चलता है । अनुकरण द्वारा मौखिक भाषा सीखी जाती है, परन्तु अनुकरण सदैव अपूर्ण रहता है । इसी कारण भाषा सदैव से ही परिवर्तनशील है । शारीरिक एवं मानसिक विभिन्नता का प्रीााव भी भाषा में आसानी से दिखाई देता है ।

भाषा का कार्य :- भाषा के बिना मनुष्य पशु के समान है । भाषा के कारण ही मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है । ''यदि शब्द रूपी ज्योति से यह संसार प्रदीप्त न होता तब यह समस्त संसार अंधकारमय हो जाता है । ''

-काव्यादर्श-

भाषा निम्नांकित कार्य करती है -

१. सांप्रेषणिक कार्य - जब वक्ता द्वारा श्रोत को कोई सूचना संप्रेषित की जाती है, और सीधे विचार विनिमय होता है, तो भाषा संरचना का स्तर अलग होता है, जिसे हम सांप्रेषणिक कार्य करते है । सामान्य बातचीत में इसका उपयोग हेाता है ।

२. अभिव्यक्ति प्रकार्य :- भाषा के द्वारा वक्ता स्वयं को अभिव्यक्त करता है । अतः हर व्यक्ति की भाषा कुछ न कुछ बदल जाती है । इसे हम उस व्यक्ति विशेष की शैली कहते है । भाषा के सभी स्तरो पर यह परिवर्तन दिखाई देता है । साहित्य सृजन का क्षेत्र भी इससे अछुता नही इसमें भी कथा भाषा और काव्य भाषा का अंतर-साम्य देखा जा सकता है । अभिव्यक्ति के अनुसार भाषा कार्य संपादित करती है ।

३. प्रभाविक कार्य :- भाषा का प्रयोग जब इस रूप में हेाता है, जिसमें संप्रेषण और आत्म अभिव्यक्ति की अपेक्षा

श्रोता को प्रभावित करना ही मुख्य उद्येश्य हो तो उसे भाषा का प्रभावी कार्य कहा जाता है ।

४. समस्टिक कार्य :- भाषा वैज्ञानिको के अनुसार भाषा के उपर्युक्त तीन प्रकार्य अलग-अलग अवसरो पर संपादित होते है । इस प्रकार्यो से समन्वित भाषा का अस्तित्व अलग-अलग होता है, जिसे समस्टिक कार्य कहा जाता है । जिस प्रकार अलग-अलग वस्तुये अपने स्वतंत्र महत्व रखाती है, लेकिन एक साथ प्रसतुत किये तो किसी अन्य वस्तु का बोध कराती है ।

इसके बावजूद भी भाषा की अपनी निजता होती है । भषा का जो निजी अस्तित्व है, अभिव्यक्ति से अलग है, उसे समस्टिक प्रकार्य कहा जा सकता है ।

भाषा की विशेषताएँ :- जब हम भाषा का संदर्भ मानवीय भाषा से लेते हैं, तो यह जानना आवश्यक हो जाता है, कि मानवीय भाषा की मूलभूत विशेषताएँ या अभिलक्षण कौन-कौन से है । ये अभिलक्षण या विशेषताएँ ही मानवीय भाषा को अन्य भाषिक संदर्भो से अलग करते है ।

ये विशेषताएँ निम्नांकित है :-

१. यादृच्छिकता (मनमानापन) - अर्थात् माना हुआ । यहॉ मानने का अर्थ व्यक्ति द्वारा नहीं वरन् एक विशेष समूह द्वारा मानना है । एक विशेष समुदाय किसी भाव या वस्तु के लिये जो शब्द बना लेता है, उसका उस भाव से कोई संबंध नहीं होता । उसी वस्तु के लिये भाषा में दूसरे शब्द का प्रयोग होता है । यह मनमनापन शब्द और याकरण दोनो रूपों में दिखाई देता है ।

२. सृजनात्मकता (उत्पादन क्षमता) मानवीय भाषा की मूलभूति विशेषता उसकी सृजनात्मकता है । अन्य जीवों में बोलने की प्रक्रिया में परिवर्तन नहीं होता पर मनुष्य शब्दों और वाक्य विन्यास की सीमित प्रक्रिया से नित्य नये प्रयोग करता रहता है । सीमित शब्दों को ही भिन्न-भिन्न ढंग से प्रयुक्त कर वह अपने भावों को अभिव्यक्त करता है । यह भाषा की सृजनात्मकता के कारण ही संभव हो पाता है ।

३. अनुकरण ग्रहता :- मानवेत्तर प्राणियों की भाषा जन्मजात होती है । वे उसमें अभिवृद्धि या परिवर्तन नहीं कर सकते । मानवीय भाषा जन्म जाति नहीं होती है । मनुष्य भाषा को समाज से अनुकरण कर सीखता है, इसलिये मनुष्य एक से अधिक भाषाएँ सीख लेता है ।

४. परिवर्तनशीलता - मानव भाषा परिवर्तनशील होती है । शब्द एक युग से दूसरे युग के आते-आते नये अर्थ में प्रयुक्त होने लगते है । पुरानी भाषा में इतने परिवर्तन हो जाते है, कि एक नयी भाषा का उदय हो जाता है । संस्कृत से हिन्दी तक की विकास यात्रा भाषा की पिरवर्तनशीलता का परिणाम है ।

५. विविक्तता :- मानव भाषा की संरख्ना कई घटकों से होती है । ध्वनि से शब्द और शब्द से वाक्य विच्छेद घटक होते है । इस प्रकार अनेक इकाईयों का योग होने के कारण मानवषा विविक्त होती है ।

६. द्वैतता - वाक्य के दो स्तर होते है :- प्रथम स्तर सार्थक इकाई की है, और द्वितीय स्तर निरर्थक इकाई की होती है । कोई भी वाक्य इन दो स्तरो से मिलकर बनता है । निरर्थक इकाईयॉ भी सार्थक इकाईयो का निर्माण करती है । दो स्तरों पर भाषा की रचना होने के कारण ही भाषा को द्वैत कहा जाताहै ।

७. भूमिकाओं का परस्पर परिवर्तन - भाषा के दो पक्ष वक्ता और श्रोता दोनों अपनी भूमिका में परस्पर परिवर्तन कर सकते है ।

८. अंतरणता - भाषा वर्तमान के साथ साथ भविष्य तथा अतीत की सूचना भी दे सकती है । दुरस्थ देश की सूचना भी प्राप्त की जा सकती है ।

९. असहज वृत्तिकता - मानवेत्तर भाषा प्राणी की सहजवृत्ति आहार निद्रा भय से सम्बहद होती है । इसके लिये वे कुछ ध्वनियों का उच्चारण करते है, किन्तु मानव भाषा सहजातवृत्तियों से संबंधित नहीं होती है ।

ईकाई २.

हिन्दी भाषा की संरचना

भाषा की नियम बद्ध व्यवस्था–

हिन्दी का स्वरूप ध्वनि पर आधारित है अर्थात उच्चरण और लेखन में किसी प्रकार का अंतर नहीं होता । वक्ता के मुख से जो ध्वनि बोली जायेगी इसी प्रकार लिखी जायेगी क्योंकि एक ध्वनि के लिए एक ही अक्षर होता है । अतः हिन्दी ध्वन्यात्मक भाषा है ।

हिन्दी एक प्रत्यय प्रधान भाषा है । उपसर्ग प्रधान भाषा में शब्दों का क्रम मुख्य है ।

भाषा की नियमबद्ध व्यवस्था के अर्न्तगत ध्वनि, शब्द, वाक्य व की चर्चा होती हैद्व जो निम्नांकित प्रकार से है :'–

ध्वनि – इसका संबंध वर्णमाला में स्वर और व्ंजन होते है । हिन्दी में दस स्वरों का प्रयोग होता है, और बियालीस व्यंजन होते है । ध्वनियों का संबंध वर्णमाला के स्वर अक्षरों से होता है । ''स्वर उस ध्वनियों को कहते है, जनके उच्चारण से वायुमार्ग में किसी भी प्रकार का पूर्ण या अपूर्ण अवरोध नहीं हेाता है ।

ध्वनि विज्ञान की तीन शाखाएँ :–

१. औच्चराणिक ध्वनि विाान – बोलना (उच्चारण करना)

२. श्रौतिक ध्वनि विज्ञान – सुनना

३. तरंगीय ध्वनि विज्ञान – ध्वनि/वेग

१. ध्वनि इकाई मात्र है ध्वनियों के परिवर्तन से शब्दों के अर्थ बदलते है । ध्वनियॉ शब्द निर्माण के लिये उपयोगी होती है । सीमित ध्वनियों से असीमित शब्दों की संरचना की जाती है ।

हमारे कान द्वारा एक ध्वनि के रूप में स्वीकार किया जाने वाला ध्वनि सह ध्वनि ग्राम कहलाता है । संपूर्ण भाषा विभिन्न ध्वनियों का निरंत प्रवाह है । बोलने और लिखने में अंतर हेाता है क्योंकि एक ही ध्वनि की उच्चारित भाषा में कई सं ध्वनियॉ होती है ।

प्रत्येक भाषा का अपना ध्वनि गठन होता है, जो अन्य भाषाओं से भिन्न प्रकार का हेाता है ।

प्रत्येक भाषा का अपना ध्वनि गठन होता है, जो अन्य भाषाओं से भिन्न प्रकार का हेाता है । हिन्दी भाषा के ध्वनि ग्राम दो

प्रकार के हेाते है :-

१. खण्ड ध्वनिग्राम

२. खण्डेत्तर ध्वनिग्राम

स्वर तथा व्यंजनों का पता खण्ड ध्वनि ग्राम के अंतर्गत लगाया जाता है ।

<u>स्वर एवं व्यंजन का वर्गीकरण :-</u>

<u>स्वर एवं उनका वर्गीकरण :-</u>

हिन्दी में स्वरों की संख्या ऑ को मिलाकर ग्यारह मानी जाती है । हिन्दी स्वरेा का वर्गीकरण छः आधारो पर किया जाता है ।

१. मात्राओं के आधार पर :- हस्व उच्चारण में कम समय और दीर्घ में अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है ।

हस्व स्वर - अ,इ,उ.

दीर्घ स्वर - आ,ई,अ,ऐ,ओ ।

२. जीभ के भाग के आधार पर

अग्र भाग से - इ,ई,ए,ऐ

मध्य भाग से - अ

पिछले या पश्च भाग से - उ,ऊ, ओ,औ,ऑ

३. मुख्य मार्ग से निकलने के आधार पर

जिन स्वरों के उच्चारण में वायु मुख से निकलती है - जैसे - अ,आ,ओ,इ,ई,उ,ए,ऐ,औ इसी प्रकार के स्वर है ।

जिन स्वरों के उच्चारण में वायु नाक से निकलती है :

जैसे - अॅ,ऑ,ऊॅ,ऐं,ओं,औं आदि ।

४. ओठो की स्थिति के आधार पर

ओठ वृत्तमुखी - उ,ऊ,ओ,औ

ओंठ अवृत्तामुखी - अ,आ,इ,ई,ए,ऐ

५. जीभ के उठने के आधार पर

जीभ के उपर उठना संवृत और नीचे होने विकृत कहलाता है, तथा मध्य में होना अर्ध विकृत कहलाता है ।

जैसे - संवृत - इ,ई,उ,ऊ

अर्ध संवृत्त - ऐ,ओ,

विवृत्त - आ

अर्ध विवृतत - ऐ,अ

६. प्रकृति के आधार पर - स्वर मूल तथा संयुक्त दो प्रकार के होते है । मूल स्वर में जीभ स्थिर रहती है।

जैसे - अ,ओ,इ,ई,उ,ऊ,ए,ओ मूलज स्वर है ।

संयुक्त स्वर में जीभ एक स्वर से दूसरे स्थान की ओर चलती है ।

जैसे - ऐ,औ, संयुक्त स्वर है ।

व्यंजन एवं उनका वर्गीकरण -

हिन्दी में व्यं की संख्या ब्यालीस होती है, और इनका वर्गीकरण निम्नांकित चार आधार पर किया गया है :-

१. स्थान के आधार पर : व्यंजन के उचचरण स्थान पर आधार हेात है :-

जैसे - ओंठ से - प,फ,ब,भ,म,व

दॉत से - त,थ,द,ध

तालु से - च,छ,ज,झ,

पूर्व तालव्य से ,ठ,ड,ण,ड़,ढ़

कोमल तालव्य से - क,ख,ग,घ,ड

गले से - कृ,क,घ,ज़ आदि

२. प्रयत्न के आधार पर :- व्यंजन के आधार पर प्रयत्न किया जाता है । इसमें एक अंग का दूसरे स्पर्श होता है, जैसे - क,ख,ग,घ,ट,ठ,ढ़,त,य,द,ध,प,फ,व,भ,म, स्पर्श व्यंजन है ।

संघर्षी व्यंजन - फ,व,स,ज,श,ग, है ।

३. प्राणत्व के आधार पर - प्राण का अर्थ वायु जिनके उच्चरण में कम वायु निकलती है अल्पप्राण । अधिक वायु निकलने पर महाप्राण व्यंजन कहे जाते है ।

अल्पप्राण - क,ग,च,ज,ट,ड,ण,त,द,न,थ, ब,य,र,ल,व आदि ।

महाप्राण - ध,घ,छ,झ,ठ,द,य,ध,फ,भ आदि ।

४. घोषत्व के अधार पर - गले में स्थित स्वर मंत्र में घर्षण के समय जो ध्वनियॉ निकलती है, उन्हे घोष ध्वनि कहते है ।

जैसे - ग,घ,ज,झ,ड,द,ण,क्ष,ध,न,भ,म,र,ल,व,ह,ज,ग,ड आदि ।

जिन व्यंजनों के उच्चरण में स्वर यंत्र प्रयुक्त नहीं होते उन्हे अघोष ध्वनि कहते है

जैसे - क, ख, ल, च, छ, ट, ठ, त, प, फ, स, श, फ आदि।

हिन्दी भाषा की ध्वनियों का वर्गीकरण

स्वर - स्वतंत्र रूप से उच्चारण की जाने वाल ध्वनि को स्वर कहते है।

अ, आ, इ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ, ऑ ।

व्यंजन - वयंजन वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से नहीं निकलती या तो इसे पूर्ण अवरूद्ध हो कर फिर आगे बढ़ना पड़ता है।
हिन्दी में ४७ व्यंजन ध्वनियॉ प्रयुक्त है जिनका विवरण निम्नलिखित है-
१. क वर्ग - क, ख, ग, घ, ङ
२. च वर्ग - च, छ, ज, झ, ञ
३. ट वर्ग - ट, ठ, ड, ढ, ण
४. त वर्ग - त, थ, द, ध, न
५. प वर्ग - प, फ, ब, भ, म
६. वर्ग हीन (अन्स्थ) - य, र, ल, व

७. वर्गहीन (उष्मा) - स, श, ष, ह
८. अनुस्वार, विसर्ग - अं, अः
९. अनुनासिक शब्द - ँ (चंद्रबिन्दु)
१०. फारसी, अरबी आई ध्वनियॉ - क, ख, ग, ज, फ
११. विकसित ध्वनियॉ - ड़, ढ़, त
१२. संयुक्त व्यंजन ध्वनि - क्ष, त्र, ज्ञ

व्यंजनों का वर्गीकरण

प्रयत्न के आधार पर वर्गीकरण -
स्पर्श व्यंजन
स्पर्श संघर्षी
संघर्षी व्यंजन
अनुनासिक व्यंजन
पार्श्विक व्यंजन
लुण्ठित व्यंजन
अर्सप्त व्यंजन
अर्ध्द स्वर

२. स्तर तंत्रियों के आधार पर वर्गीकरण

१. घोष ध्वनियॉ

२. अघोष ध्वनियॉ

३. प्राणत्व के आधार पर वर्गीकरण

१. अल्प प्राण

२. महाप्राण

४. उच्चारण के स्थानों के आधार पर वर्गीकरण

जिस स्थान से जिस ध्वनि का उच्चारण किया जाता है उसी आधार पर वर्णो का वर्गीकरण किया जाता है।

उच्चारण स्थान - वर्ण

१. कण्ड - अ, आ, ऑ, क, ख, ग, घ, ड, ह

तथा विसर्ग

२. तालु (कोमल) - इ, ई, च, छ, ज, झ, त्र, य, श

३. मूर्धा (कठोर तालु) - ऋ, ट,ठ,ड,ढ,ण,र,श

४. जीभ - ड़,ढ़

५. अन्त - त,थ,द,ध,ज

६. वर्त्स (मसूढ़ो) - न,ल,स तथा ज

७. ओण्ठ - उ,ऊ,प,ब,भ,म

८. कण्ठ तथा तालु - ए,ऐ तथा क्ष

९. दन्त आर ओण्ठ - ज,ण्र,न,म अनुस्वार तथा चन्द्रबिन्दु

१०. कण्ठ तथा जित्व मूल - क,ख,ग

५. संयुक्तता - असंयुक्तता के आधार पर वर्गीकरण

इस आधार पर व्यंजनों के तीन भेद किये जा सकते है :-

संयुक्त - घ्व, म्प

असंयुक्त - धव,मप

द्वित्व - प्च, प्प

<u>भाषा की नियम बद्ध व्यवस्था शब्द के स्तर पर</u>

अर्थ के स्तर पर शब्द भाषा की लघुतम स्वतंत्र इकाई मानी जाती है । शबें की रचना वर्णो से और वाक्यों की रचना शब्दो से होती है । भाषा की इकाई वाक्य माना जाता है, जिसे शब्दों में विभाजित किया जाता है ।

एक या एक से अधिक श्ब्दों से वाक्यों का निर्माण होता है । शब्दो की सार्थकता उनके प्रयोग पर निर्भ है ।

शब्दो में भेद निम्नांकित आधार पर किये जाते है -

१. रचनाए एवं प्रयोग के आधार पर

'अ' मुक्त शब्द - ऐसे शब्द जो स्वतंत्र रूप से प्रयोग में आ सकते है, और शब्छो के साथ भी प्रयुक्त किये जा सकते

है -

जैसे - किताब, घर, रसोई आदि

'ब' बद्ध शब्द - ऐसे शब्द जिनका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता उन्हें मुक्त शब्द के साथ की आवश्यकता होती है -

जैसे - ई, का

२. अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर शब्द के दो भेद किये जा सकते है -

''अ'' अर्थदर्शी शब्द - निका कार्य मात्र आर्थ प्रकट करना होता है ।

''ब'' संबंधदर्शी शब्द - जिनका प्रमुख कार्य संबंध दर्शन होता है ।

हिन्दी शब्दों का निर्माझा

(अ) दो शब्दो के मेल से - ये शब्द प्राचीन, और नवीन शब्द नवीन और नवीन शब्द, विदेशी और देशी शब्द, विदेशी और विदेशी शब्दों से मिलकर बनते है ।

जैसे - अंग्रेजी (रेल) + हिन्दी (गाडी) - रेल गाडी

संस्कृत (दल) + फारसी (बन्दी) - दलबन्दी

अरबी (अजायब) + हिन्दी (घर) - अजायबघर

(ब) व्यक्ति वाचक संज्ञाओं के आधार पर - किन्दही व्यक्तियों के विशिष्ट गुण, कार्य या विशेषता को लेकर शब्द बन जाते है -

जैसे - सावित्री (पतिव्रता) हरिशचन्द्र (सत्यवादी) आदि

(स) संधि बने शब्द - दो वर्णो के मेल से बने शब्द संधि कहलाते है ।

जैसे - शुभागमन, विद्यालय आदि

(द) समास से बने शब्द - दो या दो से अधिक शब्दो के संयोग से जो नये शब्द बनते है समासिक शब्द कहलाते है ।

जैसे - लम्बोदर, प्रतिदिन, माता-पिता आदि ।

(इ) उपसर्ग से बने शब्द - हिन्दी भाषा में संस्कृत भाषा के उपसर्ग अधिकतर शब्द के अर्थ में विशिष्टता लाने के लिये प्रयुक्त किये जाते है ।

जैसे - अनुप्रयोग, अवधारणा, विदेश आदि ।

(फ) प्रत्यय से बने शब्द - शब्द के अंत में प्रयुक्त शब्द अथवा शब्दांश प्रत्यय कहलाते है, जिनके प्रयोग से नवीन शब्दों की रचना होती है ।

जैसे - पालनहार, अपनापन, रचनाकार आदि ।

भाषा की नियमबद्ध व्यवस्था वाक्य के स्तर पर

वाक्य पदों या शब्दों के समूह की उस इकाई को कहते है, जो व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध तथा पूर्ण हो तथा वाक्य में क्रिया अवश्य हो ।

प्रत्येक वाक्य में अर्थ और भाव दो पक्ष होते है, जिनमें सामंजस्य का होना आवश्यक है । वाक्य का प्रयोग लिखने और बोलने दोनों में भाव प्रकट करने के लिये किया जाता है -

वाक्य की आवश्यकतायें

- वाक्य में प्रयुक्त शब्दों की सार्थकता आवश्यक है ।
- वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में अर्थ के साथ ही भाव प्रकट करने की योग्यता होनी चाहिए ।
- वाक्य में प्रयुक्त संबंधीत शब्दों में समीपता आवश्यक है

- वाक्य का स्वरूप पाठक, श्रोता की आकांक्षा पूर्ण करने वाला होना आवश्यक है ।

- वाक्य के शब्दों में व्याकरण की दृष्टि से एकरूपता होनी चाहिए ।

वाक्यों के प्रकार

वाक्यों के मुख्य भेद पॉच होते है -

१. व की दृष्टि से

अ. साधारण वाक्य

ब. संयुक्त वाक्य

स. मिश्रित वाक्य

२. क्रिया की दृष्टि से

अ. कर्त्तृ प्रधान वाक्य

ब. कर्म वाचक वाक्य

स. भाव प्रधान वाक्य

३. अर्थ की दृष्टि से

अ. विविध वाचक

ब. निषेध वाचक

स. आाा सूचन्द

द. प्रश्न वाच

इ. सन्देह सूचक

फ. इच्छा बोधक

ज. विस्मयादि बोधक

च. संकेत वाचक

४. सहित्य की दृष्टि से

अ. संयत वाक्य

ब. शिथिल वाक्य

स. संतुलित वाक्य

वाक्य में विराम चिन्हों का प्रयोग

वाक्य को भागो में विभाजन और पढने में यथा स्थान रूकने के लिये जिन चिन्हों का प्रयोग लेखन में किया जाता है, उनहे विराम चिन्ह कहा जाता है ।

विराम चिन्हों के प्रकारव - प्रमुख विराम चिन्हों के प्रकार एवं रूप निम्न है -

१. पूर्ण विरा - ।

२. अर्द्ध विरा - ;

३. अल्प विरा - ‘

४. प्रश्न चिन्ह - ?

५. संबोधन / विस्मयादि - !

६. कोष्ठक ’ - ( )

७. निर्देशक - -

८. विवरण चिन्ह - :-

This is not registered version of TotalDocConverter

९. अवतरण बिन्दु - '–'

१०. योजक का विभाजन - -